

## अध्याय ४३-४४



महासमाधि की ओर ( २ )

पूर्व तैयारी-समाधि मन्दिर, ईट का खंडन, ७२ घण्टे की समाधि, बापूसाहेब जोग का संन्यास, बाबा के अमृततुल्य वचन।

इन ४३ और ४४ अध्यायों में बाबा के निर्वाण का वर्णन किया गया है, इसलिये वे यहाँ संयुक्त रूप में लिखे जा रहे हैं।

### पूर्व तैयारी-समाधि मंदिर

हिन्दुओं में यह प्रथा प्रचलित है कि जब किसी मनुष्य का अन्तकाल निकट आ जाता है तो उसे धार्मिक ग्रन्थ आदि पढ़कर सुनाये जाते हैं। इसका मुख्य कारण केवल यही है कि जिससे उसका मन सांसारिक झंझटों से मुक्त होकर आध्यात्मिक विषयों में लग जाए और वह प्राणी कर्मवश अगले जन्म में जिस योनि को धारण करे, उसमें उसे सद्गति प्राप्त हो। सर्वसाधारण को यह विदित ही है कि जब राजा परीक्षित को एक ब्रह्मर्षि पुत्र ने शाप दिया और एक सप्ताह के पश्चात् ही उनका अन्तकाल निकट आया तो महात्मा शुकदेव ने उन्हें उस सप्ताह में श्रीमद्भागवत पुराण का पाठ सुनाया, जिससे उनको मोक्ष की प्राप्ति हुई। यह प्रथा अभी भी अपनाई जाती है। महानिर्वाण के समय गीता, भागवत और अन्य ग्रन्थों का पाठ किया जाता है। बाबा तो स्वयं अवतार थे, इसलिये उन्हें बाह्य साधनों की आवश्यकता नहीं थी, परन्तु केवल दूसरों के समक्ष उदाहरण प्रस्तुत करने के हेतु ही उन्होंने इस प्रथा की उपेक्षा नहीं की। जब उन्हें विदित हो गया कि मैं अब शीघ्र इस नश्वर देह का त्याग करूँगा, तब उन्होंने श्री वझे को “रामविजय” प्रकरण सुनाने की आज्ञा दी। श्री वझे ने एक सप्ताह प्रतिदिन पाठ सुनाया। तत्पश्चात् बाबा ने उन्हें आठों प्रहर पाठ करने की आज्ञा दी। श्री वझे ने उस अध्याय की द्वितीय आवृत्ति तीन दिन में पूर्ण कर दी और इस प्रकार ११ दिन बीत गए। फिर तीन दिन और उन्होंने पाठ

किया। अब श्री वझे बिल्कुल थक गए। इसलिये उन्हें विश्राम करने की आज्ञा हुई। बाबा अब बिल्कुल शान्त बैठ गए और आत्मस्थित होकर वे अन्तिम क्षण की प्रतीक्षा करने लगे। दो-तीन दिन पूर्व ही प्रातःकाल से बाबा ने भिक्षाटन करना स्थगित कर दिया और वे मस्जिद में ही बैठे रहे। वे अपने अन्तिम क्षण के लिये पूर्ण सचेत थे, इसलिये वे अपने भक्तों को धैर्य तो बँधाते रहते, पर उन्होंने किसी से भी अपने महानिर्वाण का निश्चित समय प्रगट न किया। इन दिनों काकासाहेब दीक्षित और श्रीमान् बूटी, बाबा के साथ मस्जिद में नित्य ही भोजन करते थे। महानिर्वाण के दिन (१५ अक्टूबर को) आरती समाप्त होने के पश्चात् बाबा ने उन लोगों को भी अपने निवासस्थान पर ही भोजन करके लौटने को कहा। फिर भी लक्ष्मीबाई शिंदे, भागोजी शिंदे, बयाजी, लक्ष्मण बाला शिम्पी और नानासाहेब निमोणकर वहीं रह गए। शामा नीचे मस्जिद की सीढ़ियों पर बैठे थे। लक्ष्मीबाई शिन्दे को ९ रुपये देने के पश्चात् बाबा ने कहा कि, “मुझे मस्जिद में अब अच्छा नहीं लगता है, इसलिये मुझे बूटी के पत्थर वाड़े में ले चलो, जहाँ मैं सुखपूर्वक रहूँगा।” ये ही अन्तिम शब्द उनके श्रीमुख से निकले। इसी समय बाबा बयाजी के शरीर की ओर झुक गए और अन्तिम श्वास छोड़ दी। भागोजी ने देखा कि बाबा की श्वास रुक गई है, तब उन्होंने नानासाहेब निमोणकर को पुकार कर यह बात कही। नानासाहेब ने कुछ जल लाकर बाबा के श्रीमुख में डाला, जो बाहर लुढ़क आया। तभी उन्होंने जोर से आवाज लगाई “अरे! देवा!” तब बाबा ऐसे दिखाई पड़े, जैसे उन्होंने धीरे से नेत्र खोलकर धीमे स्वर में ‘ओह’ कहा हो। परन्तु अब स्पष्ट विदित हो गया कि उन्होंने सचमुच ही पंचभूत शरीर त्याग दिया है।

“बाबा समाधिस्थ हो गए” - यह हृदयविदारक दुःसंवाद दावानल की भाँति तुरन्त ही चारों ओर फैल गया। शिरडी के सब नर-नारी और बालकगण मस्जिद की ओर दौड़े। चारों ओर हाहाकार मच गया। सभी के हृदय पर वज्रपात हुआ। उनके हृदय विचलित होने लगे। कोई जोर-जोर से चिल्लाकर रुदन करने लगा। कोई सड़कों पर लोटने लगा और बहुत से बेसुध होकर वहीं गिर पड़े। प्रत्येक की आँखों से झर-झर

आँसू गिर रहे थे। प्रलय काल के वातावरण में तांडव नृत्य का जैसा दृश्य उपस्थित हो जाता है, वही गति शिरडी के नर-नारियों के रुदन से उपस्थित हो गई। उनके इस महान् दुःख में कौन आकर उन्हें धैर्य बँधाता, जब कि उन्होंने साक्षात् सगुण परब्रह्म का सान्निध्य खो दिया था? इस दुःख का वर्णन भला कर ही कौन सकता है?

“अब कुछ भक्तों को श्री साई बाबा के वचन याद आने लगे। किसी ने कहा कि महाराज (साई बाबा) ने अपने भक्तों से कहा था कि, “भविष्य में वे आठ वर्ष के बालक के रूप में पुनः प्रगट होंगे।” कृष्णावतार में भी चक्रपाणि (भगवान विष्णु) ने ऐसी ही लीला की थी। श्रीकृष्ण माता देवकी के सामने आठ वर्ष की आयु वाले एक बालक के रूप में प्रगट हुये, जिनका दिव्य तेजोमय स्वरूप था और जिनके चारों हाथों में आयुध (शंख, चक्र, गदा और पद्म) सुशोभित थे। अपने उस अवतार में भगवान श्रीकृष्ण ने भू-भार हल्का किया था। साई बाबा का यह अवतार अपने भक्तों के उत्थान के लिए हुआ था। संतों की कार्यप्रणाली अगम्य होती है। साईबाबा का अपने भक्तों के साथ यह संपर्क केवल एक पीढ़ी का नहीं, बल्कि पिछले कई जन्मों का संपर्क है। ऐसा प्रतीत होता है कि इस प्रकार का प्रेम-सम्बन्ध विकसित करके महाराज (श्री साई बाबा) दौर पर चले गए हैं और भक्तों को दृढ़ विश्वास है कि वे शीघ्र ही पुनः वापस आ जाएँगे।”

अब समस्या उत्पन्न हुई कि बाबा के शरीर की अन्तिम क्रिया किस प्रकार की जाए? कुछ यवन लोग कहने लगे कि उनके शरीर को कब्रिस्तान में दफन कर उसके ऊपर एक मकबरा बना देना चाहिए। खुशालचन्द और अमीर शक्कर की भी यही धारणा थी, परंतु ग्राम्य अधिकारी श्री रामचंद्र पाटील ने दृढ़ और निश्चयात्मक स्वर में कहा कि, “तुम्हारा निर्णय मुझे मान्य नहीं है। शरीर को वाड़े के अतिरिक्त अन्यत्र कहीं भी नहीं रखा जाएगा।” इस प्रकार लोगों में मतभेद उत्पन्न हो गया और वह वादविवाद ३६ घण्टों तक चलता रहा।

बुधवार के दिन प्रातःकाल बाबा ने लक्ष्मण मामा जोशी को स्वप्न दिया और उन्हें अपने हाथ से खींचते हुए कहा कि, “शीघ्र उठो, बापूसाहेब समझता है कि मैं मृत हूँ। इसलिये वह तो आएगा नहीं।

तुम पूजन और काकड़ आरती करो।” लक्ष्मण मामा ग्राम के ज्योतिषी, शामा के मामा तथा एक कर्मठ ब्राह्मण थे। वे नित्य प्रातःकाल बाबा का पूजन किया करते, तत्पश्चात् ही ग्राम देवियों और देवताओं का। उनकी बाबा पर दृढ़ निष्ठा थी, इसलिये इस दृष्टांत के पश्चात् वे पूजन की समस्त सामग्री लेकर वहाँ आए और ज्यों ही उन्होंने बाबा के मुख का आवरण हटाया तो उस निर्जीव अलौकिक महान् प्रदीप्त प्रतिभा के दर्शन कर वे स्तब्ध रह गए, मानो हिमांशु ने उन्हें अपने पाश में आबद्ध करके जड़वत् बना दिया हो। स्वप्न की स्मृति ने उन्हें अपना कर्तव्य करने को प्रेरित कर दिया। फिर उन्होंने मौलवियों के विरोध की कुछ भी चिंता न कर विधिवत् पूजन और काकड़ आरती की। दोपहर बापूसाहेब जोग भी अन्य भक्तों के साथ आए और सदैव की भाँति मध्याह्न आरती की।

बाबा के अन्तिम श्री वचनों को आदरपूर्वक स्वीकार करके लोगों ने उनके शरीर को बूटी वाड़े में ही रखने का निश्चय किया और वहाँ का मध्य भाग खोदना आरम्भ कर दिया। मंगलवार की सन्ध्या को राहाता से सब-इन्स्पेक्टर और भिन्न-भिन्न स्थानों से अनेक लोग आकर वहाँ एकत्र हुए। सब लोगों ने उस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। दूसरे दिन प्रातःकाल बम्बई से अमीर भाई और कोपरगाँव से मामलेदार भी वहाँ आ पहुँचे। उन्होंने देखा कि लोग अभी भी एकमत नहीं हैं। तब उन्होंने मतदान करवाया और पाया कि अधिकांश लोगों का बहुमत वाड़े के पक्ष में ही है। फिर भी वे इस विषय में कलेक्टर की स्वीकृति अति आवश्यक समझते थे। तब काकासाहेब स्वयं अहमदनगर जाने को उद्यत हो गए, परन्तु बाबा की प्रेरणा से विपक्षियों ने भी प्रस्ताव सहर्ष स्वीकार कर लिया और उन सबने मिलकर अपना मत भी वाड़े के ही पक्ष में दिया। अतः बुधवार की सन्ध्या को बाबा का पवित्र शरीर बड़ी धूमधाम और समारोह के साथ वाड़े में लाया गया और विधिपूर्वक उस स्थान पर समाधि बना दी गई, जहाँ ‘मुरलीधर’ की मूर्ति स्थापित होने को थी। सच तो यह है कि बाबा ‘मुरलीधर’ बन गए और वाड़ा, समाधि मंदिर एवं भक्तों का एक पवित्र देवस्थान जहाँ अनेकों भक्त आया जाया करते और अभी भी नित्य-प्रति वहाँ आकर

सुख और शान्ति प्राप्त करते हैं। बालासाहेब भाटे और बाबा के अनन्य भक्त श्री उपासनी ने बाबा की विधिवत् अन्तिम क्रिया की।

जैसा प्रोफेसर नारके को देखने में आया, यह बात विशेष ध्यान देने योग्य है कि बाबा का शरीर ३६ घण्टे के उपरांत भी जड़ नहीं हुआ और उनके शरीर का प्रत्येक अवयव लचीला बना रहा, जिससे उनके शरीर पर से कफनी बिना चीरे हुए सरलता से निकाली जा सकी।

### ईंट का खण्डन

बाबा के निर्वाण के कुछ समय पूर्व एक अपशकुन हुआ, जो इस घटना की पूर्वसूचना-स्वरूप था। मस्जिद में एक पुरानी ईंट थी, जिसपर बाबा अपना हाथ टेककर रखते थे। रात्रि के समय बाबा उस पर सिर रखकर शयन किया करते थे। यह अनेक वर्षों तक चला। एक दिन बाबा की अनुपस्थिति में एक बालक ने मस्जिद में झाड़ू लगाते समय वह ईंट अपने हाथ में उठाई। दुर्भाग्यवश वह ईंट उसके हाथ से गिर पड़ी और उसके दो टुकड़े हो गए। जब बाबा को इस बात की सूचना मिली तो उन्हें उसका बड़ा दुःख हुआ और वे कहने लगे कि, “यह ईंट नहीं फूटी है, मेरा भाग्य ही फूटकर छिन्न-भिन्न हो गया है। यह तो मेरी जीवनसंगिनी थी और इसको अपने पास रखकर मैं आत्म-चिंतन किया करता था। यह मुझे अपने प्राणों के समान प्रिय थी और उसने आज मेरा साथ छोड़ दिया है।” कुछ लोग यहाँ शंका कर सकते हैं कि बाबा को ईंट जैसी एक तुच्छ वस्तु के लिये इतना शोक क्यों करना चाहिए? इसका उत्तर हेमाडपंत इस प्रकार देते हैं कि सन्त जगत के उद्धार तथा दीन और अनाश्रितों के कल्याणार्थ ही अवतीर्ण होते हैं। जब वे नरदेह धारण करते हैं और जनसम्पर्क में आते हैं तो वे इसी प्रकार आचरण किया करते हैं, अर्थात् बाह्य रूप से वे अन्य लोगों के समान ही हँसते, खेलते और रोते हैं, परन्तु आन्तरिक रूप से वे अपने अवतार-कार्य और उसके ध्येय के लिये सदैव सजग रहते हैं।

## ७२ घण्टे की समाधि

इसके ३२ वर्ष पूर्व भी बाबा ने अपनी जीवन-रेखा पार करने का एक प्रयास किया था। १८८६ में मार्गशीर्ष पूर्णिमा के दिन बाबा को दमा से अधिक पीड़ा हुई और इस व्याधि से छुटकारा पाने के लिये उन्होंने अपने प्राण ब्रह्मांड में चढ़ाकर समाधि लगाने का विचार किया। अतएव उन्होंने भगत म्हालसापति से कहा कि, “तुम मेरे शरीर की तीन दिन तक रक्षा करना और यदि मैं वापस लौट आया तो ठीक है, नहीं तो उस स्थान (एक स्थान को इंगित करते हुए) पर मेरी समाधि बना देना और दो ध्वजाएँ चिह्न स्वरूप फहरा देना।” - ऐसा कहकर बाबा रात में लगभग दस बजे पृथ्वी पर लेट गए। उनका श्वासोच्छ्वास बन्द हो गया और ऐसा दिखाई देने लगा कि जैसे उनके शरीर में प्राण ही न हों। सभी लोग, जिनमें ग्रामवासी भी थे, वहाँ एकत्रित हुए और शरीर परीक्षण के पश्चात् शरीर को उनके द्वारा बताये हुए स्थान पर समाधिस्थ कर देने का निश्चय करने लगे। परन्तु भगत म्हालसापति ने उन्हें ऐसा करने से रोका और उनके शरीर को अपनी गोद में रखकर वे तीन दिन तक उसकी रक्षा करते रहे। तीन दिन व्यतीत होने पर रात को लगभग तीन बजे प्राण लौटने के चिह्न दिखलाई पड़ने लगे। श्वासोच्छ्वास पुनः चालू हो गया और उनके अंग-प्रत्यंग हिलने डुलने लगे। उन्होंने नेत्र खोल दिये और करवट लेते हुए पुनः चेतना में आ गए।

इस प्रसंग तथा अन्य प्रसंगों पर दृष्टिपात कर अब हम यह पाठकों पर छोड़ते हैं कि वे ही इसका निश्चय करें कि क्या बाबा अन्य लोगों की भाँति ही साढ़े तीन हाथ लम्बे एक देहधारी मानव थे, जिस देह को उन्होंने कुछ वर्षों तक धारण करने के पश्चात् छोड़ दिया, या वे स्वयं आत्मज्योति स्वरूप थे। पंच महाभूतों से शरीर निर्मित होने के कारण उसका नाश और अन्त तो सुनिश्चित है, परन्तु जो सद्वस्तु (आत्मा) अन्तःकरण में है, वही यथार्थ में सत्य है। उसका न रूप है, न अंत है और न नाश। यही शुद्ध चैतन्यघन या ब्रह्म - इन्द्रियों और मन पर शासन और नियंत्रण रखने वाला जो तत्त्व है, वही 'साई' है, जो संसार के समस्त प्राणियों में विद्यमान है और जो सर्वव्यापी है।

अपना अवतार-कार्य करने के लिये ही उन्होंने देह-धारण किया था और वह कार्य पूर्ण होने पर उन्होंने उसे त्याग कर पुनः अपना शाश्वत और अनंत स्वरूप धारण कर लिया। श्री दत्तात्रेय के पूर्ण अवतार-गाणगापुर के श्री नृसिंह सरस्वती के समान श्री साई भी सदैव वर्तमान हैं। उनका निर्वाण तो एक औपचारिक बात है। वे जड़ और चेतन सभी पदार्थों में व्याप्त हैं तथा सर्वभूतों के अन्तःकरण के संचालक और नियंत्रणकर्ता हैं। इसका अभी भी अनुभव किया जा सकता है और अनेकों के अनुभव में आ भी चुका है, जो अनन्य भाव से उनके शरणागत हो चुके हैं और जो पूर्ण अंतःकरण से उनके उपासक हैं।

यद्यपि बाबा का स्वरूप अब देखने को नहीं मिल सकता है, फिर भी यदि हम शिरडी जाएँ तो हमें वहाँ उनका जीवित-सदृश चित्र मस्जिद (द्वारकामाई) को शोभायमान करते हुए अब भी देखने में आएगा। यह चित्र बाबा के एक प्रसिद्ध भक्त-कलाकार श्री शामराव जयकर ने बनाया था। एक कल्पनाशील और भक्त दर्शक को यह चित्र अभी भी बाबा के साक्षात् दर्शन के समान ही सन्तोष और सुख पहुँचाता है। बाबा अब देह में स्थित नहीं हैं, परन्तु वे सर्वभूतों में व्याप्त हैं और भक्तों का कल्याण पूर्ववत् ही करते हैं, करते रहेंगे, जैसा कि वे सदेह रहकर किया करते थे। बाबा अमर हैं, चाहे वे नरदेह धारण कर लें, जो कि एक आवरण मात्र है, परन्तु वे तो स्वयं भगवान श्री हरि हैं, जो समय-समय पर भूतल पर अवतीर्ण होते हैं।

### **बापूसाहेब जोग का संन्यास**

जोग के संन्यास की चर्चा कर हेमाडपंत यह अध्याय समाप्त करते हैं। श्री सखाराम हरी उर्फ बापूसाहेब जोग पूने के प्रसिद्ध वारकरी विष्णु बुवा जोग के काका थे। वे लोक निर्माण विभाग (P.W.D.) में पर्यवेक्षक थे। सेवा-निवृत्ति के पश्चात् वे सपत्नीक शिरडी में आकर रहने लगे। उनके कोई सन्तान न थी। पति और पत्नी दोनों की ही साई चरणों में अटल श्रद्धा थी। वे दोनों उनकी पूजा और सेवा करने में ही अपने दिन व्यतीत किया करते थे। मेघा की मृत्यु के पश्चात् बापूसाहेब जोग ने बाबा की महासमाधिपर्यन्त मस्जिद और चावड़ी में आरती की। उनको साठे वाड़ा में श्री ज्ञानेश्वर और श्री एकनाथी

भागवत का वाचन तथा उसका भावार्थ श्रोताओं को समझाने का कार्य भी दिया गया था। इस प्रकार अनेक वर्षों तक सेवा करने के पश्चात् उन्होंने एक बार बाबा से प्रार्थना की कि - “हे मेरे जीवन के एकमात्र आधार! आपके पूजनीय चरणों का दर्शन कर समस्त प्राणियों को परम शांति का अनुभव होता है। मैं इन श्रीचरणों की अनेक वर्षों से निरंतर सेवा कर रहा हूँ, परन्तु क्या कारण है कि आपके चरणों की छाया के सन्निकट होते हुए भी मैं उनकी शीतलता से वंचित हूँ। मेरे इस जीवन में कौन-सा सुख है, यदि मेरा चंचल मन शान्त और स्थिर बनकर आपके श्रीचरणों में लीन नहीं हो? क्या इतने वर्षों का मेरा सन्त समागम व्यर्थ ही जाएगा? मेरे जीवन में वह शुभ घड़ी कब आएगी, जब आपकी कृपादृष्टि मुझपर होगी?”

भक्त की प्रार्थना सुनकर बाबा को दया आ गई। उन्होंने उत्तर दिया कि थोड़े ही दिनों में अब तुम्हारे अशुभ कर्म समाप्त हो जाएँगे तथा पाप और पुण्य जलकर शीघ्र ही भस्म हो जाएँगे। मैं तुम्हें उस दिन ही भाग्यशाली समझूँगा, जिस दिन तुम ऐन्द्रिक-विषयों को तुच्छ जानकर समस्त पदार्थों से विरक्त होकर पूर्ण अनन्य भाव से ईश्वर भक्ति कर संन्यास धारण कर लोगे। कुछ समय पश्चात् बाबा के वचन सत्य सिद्ध हुये। उनकी स्त्री का देहान्त हो जाने पर उनकी अन्य कोई जिम्मेदारी शेष न रही। वे अब स्वतंत्र हो गए और उन्होंने अपनी मृत्यु के पूर्व संन्यास धारण कर अपने जीवन का लक्ष्य प्राप्त कर लिया।

### बाबा के अमृततुल्य वचन

दयानिधि कृपालु श्री साई समर्थ ने मस्जिद (द्वारिकामाई) में अनेक बार निम्नलिखित अमृत वचन कहे थे :-

“जो मुझे अत्यधिक प्रेम करता है, वह सदैव मेरा दर्शन पाता है। उसके लिए मेरे बिना सारा संसार ही सूना है। वह केवल मेरा ही लीलागान करता है। वह सतत् मेरा ही ध्यान करता है और सदैव मेरा ही नाम जपता है। जो पूर्ण रूप से मेरी शरण में आ जाता है और सदा मेरा ही स्मरण करता है, अपने ऊपर उसका यह ऋण मैं उसे मुक्ति (आत्मोपलब्धि) प्रदान करके चुका दूँगा। जो मेरा ही चिन्तन करता है, और मेरा प्रेम ही जिसकी भूख-प्यास



है और जो पहले मुझे अर्पित किये बिना कुछ भी नहीं खाता, मैं उसके अधीन हूँ। जो इस प्रकार मेरी शरण में आता है, वह मुझसे मिलकर उसी तरह एकाकार हो जाता है, जिस तरह नदियाँ समुद्र से मिलकर तदाकार हो जाती हैं। अतएव महत्ता और अहंकार का सर्वथा परित्याग करके तुम्हें मेरे प्रति, जो तुम्हारे हृदय में आसीन है, पूर्ण रूप से समर्पित हो जाना चाहिए।”

यह 'मैं' कौन है?

श्री साईबाबा ने अनेक बार समझाया कि यह 'मैं' कौन है। इस 'मैं' को ढूँढ़ने के लिये अधिक दूर जाने की आवश्यकता नहीं है। तुम्हारे नाम और आकार से परे मैं तुम्हारे अन्तःकरण और समस्त प्राणियों में चैतन्यघन स्वरूप में विद्यमान हूँ और यही 'मैं' का स्वरूप है। ऐसा समझकर तुम अपने तथा समस्त प्राणियों में मेरा ही दर्शन करो। यदि तुम इसका नित्य प्रति अभ्यास करोगे तो तुम्हें मेरी सर्वव्यापकता का अनुभव शीघ्र हो जाएगा और मेरे साथ अभिन्नता प्राप्त हो जाएगी।

अतः हेमाडपंत पाठकों को नमन कर उनसे प्रेम और आदरपूर्वक विनम्र प्रार्थना करते हैं कि उन्हें समस्त देवताओं, सन्तों और भक्तों का आदर करना चाहिए। बाबा सदैव कहा करते थे कि जो दूसरों को पीड़ा पहुँचाता है, वह मेरे हृदय को दुःख देता है तथा मुझे कष्ट पहुँचाता है। इसके विपरीत जो स्वयं कष्ट सहन करता है, वह मुझे अधिक प्रिय है। बाबा समस्त प्राणियों में विद्यमान हैं और उनकी हर प्रकार से रक्षा करते हैं। समस्त जीवों से प्रेम करो, यही उनकी आंतरिक इच्छा है। इस प्रकार का विशुद्ध अमृतमय स्रोत उनके श्री मुख से सदैव झरता रहता था। अतः जो प्रेमपूर्वक बाबा का लीलागान करेंगे या उन्हें भक्तिपूर्वक श्रवण करेंगे, उन्हें 'साई' से अवश्य अभिन्नता प्राप्त होगी।

॥ श्री सद्गुरु साईनाथार्पणमस्तु। शुभं भवतु ॥